Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.38, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, NOV-DEC, 2019, VOL- 7/55

फ़िजी में हिंदी पत्रकारिता और शांतिदूत समाचारपत्र

धरवेश कठेरिया[1], पीयूष प्रताप सिंह[2], प्रमोद पाण्डेय[3], अविनाश त्रिपाठी[4] & नीरज कुमार सिंह[5]

[1] सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

[2] सहायक प्रोफेसर, सूचना तथा भाषा अभियांत्रिकी केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

[3] सहायक प्राध्यापक, संचार एवं शोध विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्यप्रदेश।

[4] पीएच.डी. शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।

[5] एम. फिल. शोधार्थी, सामाजिक वहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केंद्र (2016-17), काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तरप्रदेश।

Abstract

भारत में पत्रकारिता की शुरुआत 1780 में एक अंग्रेज़ जेम्स अगस्टस हिक्की के द्वारा की जाती है। हिक्की ने अंग्रेजी भाषा में भारत का पहला समाचारपत्र निकाला। इसके बाद भारत को हिंदी पत्र निकालने में लगभग पांच दशक लग गए। जिसके बाद भारत में उदन्त मार्तंड के के माध्यम से हिंदी पत्रकारिता का उदय होता है। वर्तमान में हिंदी पत्रकारिता का परचम केवल भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी हिंदी पत्रकारिता का परचम लहरा रहा है। भारत देश जब अंग्रेजों की दासता में था तब अंग्रेजों ने भारत से काम करने के लिए बहुत से मजदूरों को दूसरे देशों में भेजा। जहां बहुत से मजदूर स्थायी तौर पर बस गए और भारतीय संस्कृति के साथ भारतीय भाषा को भी उन देशों में स्थापित किया। ऐसे ही एक देश फ़िजी में हिंदी और हिंदी पत्रकारिता वहाँ के लोगों के जहां में बस गई है। लेकिन किसी भी दूसरे देश के लोगों का बसना और अपनी भाषा को स्थापित करना बहुत दुर्गम काम होता है। जिसमें फ़िजी के हिंदी समाचारपत्र शांतिदूत ने बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शांतिदूत समाचारपत्र लगभग आठ दशकों से फ़िजी में अनवरत प्रकाशित हो रहा है। इसने फ़िजी की हिंदी पत्रकारिता में एक नया आयाम जोड़ा और भारतीय भाषा के प्रचार-प्रसार में अप्रतिम योगदान दिया।

शब्द कुंजी: डायस्पोरा, फ़िजी, पत्रकारिता, समाचारपत्र, संस्कृति, गिरमिटिया, अध्ययन, भाषा।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

उपकल्पना:

1- शांतिदूत ने फ़िजी में हिंदी के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2- शांतिदूत समाचारपत्र मानक हिंदी का प्रयोग करता है।

3- गिरमिटिया मजदूरों के लिए शांतिदूत समाचारपत्र विशेष महत्व रखता है।

उद्देश्य:

अध्ययन को स्वरूप प्रदान करने के लिए निम्न उद्देश्य तय किए गए हैं-

1. शांतिदूत समाचारपत्र का हिंदी पत्रकारिता में योगदान का अवलोकन
2. भारत और फिजी के सम्बन्धों में शांतिदूत समाचारपत्र की भूमिका का अध्ययन
3. हिंदी के प्रचार प्रसार में शांतिदूत समाचारपत्र की भूमिका का अध्ययन

साहित्य पुनरावलोकन:

प्रस्तुत शोध अध्ययन विषय- 'फ़िजी में हिंदी पत्रकारिता और शांतिदूत समाचारपत्र' की प्रासंगिकता को समझने के लिए फिजी में हिंदी पत्रकारिता और शांतिदूत समाचार से संबंधित पुस्तकों का अध्ययन किया गया है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों का विवरण निम्नलिखित है-

- जैन, डॉ. पवन कुमार, (1993). विदेशों में हिंदी पत्रकारिता, नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन। हिंदी हिंदी

प्रस्तुत पुस्तक विदेशों में हिंदी पत्रकारिता शोध विषय की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक है। यह पुस्तक 6 अध्यायों में विभक्त है पुस्तक विश्व में हिंदी पत्रकारिता के गहन इतिहास को प्रस्तुत करती है साथ ही विदेशी पत्रकारिता पर भी विशेष प्रकाश डालती है और उनकी यथास्थिति को स्पष्ट करती है। पुस्तक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं पर विस्तृत समीक्षात्मक चर्चा भी करती है। पुस्तक के छठे अध्याय को फिजी की हिंदी पत्रकारिता पर केंद्रित किया गया है जिससे यह पुस्तक शोध के लिए और भी प्रासंगिक हो जाती है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पुस्तक में फिजी की हिंदी पत्रकारिता के विभिन्न आयामों को बहुत ही अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

- जोशी, रामशरण, (2014). भारतीय डायस्पोरा: विविध आयाम, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

यह पुस्तक 'भारतीय डायस्पोरा : विविध आयाम' प्रवासन के अर्थ, विकास और प्रभाव पर महत्त्पूर्ण सामग्री प्रस्तुत करती है। इसके अनुसार, 'आज का डायस्पोरा उन्नीसवीं सदी की अभिशप्त, प्रताड़ित और शोषित मानवता नहीं है। आधुनिक डायस्पोरा उत्तर-औपनिवेशक और साम्राज्यवादी काल में राष्ट्र-राज्य (नेशन-स्टेट) के निर्माण और संचालन में निर्णायक भूमिका निभा रहा है। यही कारण है कि आज इस शब्द का प्रयोग विभिन्न देशों के मानव समूहों के विस्थापन, प्रवासन और पुनर्वसन के संसार को रेखान्कित करने के लिए किया जाता है।' पुस्तक में बारह लेख हैं जो भारतीय डायस्पोरा के बारे में मूल्यवान जानकारियां देते हैं। अंत में दी गई पारिभाषिक शब्दावली से विषय के विविध आयाम सूत्रबद्ध होते हैं। आज जब भारतवंशी विश्व के विभिन्न देशों में रहते हुए उन देशों की समृद्धि व गतिशीलता में उल्लेखनीय योगदान कर रहे हैं, तब उनके 'अस्मिता-विमर्श' पर अध्ययन सामग्री की बहुत जरूरत है। यह पुस्तक इस आभाव को काफी हद तक कम करती है। पुस्तक शोध के लिए अत्यंत उपयोगी है।

- वैदिक, डॉ. वेद प्रताप, (1976). हिंदी पत्रकारिता के विविध आयाम, कानपुर: नेशनल पब्लिशिंग हाउस।

पुस्तक हिंदी पत्रकारिता के विविध आयाम हिंदी पत्रकारिता के प्रत्येक पहलू को समझने के लिए बहुत ही उपयोगी है। पुस्तक में देश और विदेश के हिंदी अखबारों के स्वरूप पर भी प्रकाश डाला जगया है साथ ही अखबार किस तरह से भाषा को पुष्ट कर रहे हैं उस पर भी प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत पुस्तक में हिंदी पत्रकारिता के विविध पहलुओं को उजागर किया है। यह पुस्तक शोध विषय के लिए बहुत उपयोगी है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

• चतुर्वेदी, जगदीश प्रसाद, (1987). पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य, इलाहाबाद: साहित्य संगम।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने पत्रकारिता के विभिन्न आयामों को रेखांकित किया है साथ ही पुस्तक पत्रकारिता और भाषा को लेकर भी काफी सजगता से लिखी गई है। प्रस्तुत पुस्तक में विदेशों में हिंदी पत्रकारिता की स्थिति को रेखांकित किया गया है। डायस्पोरा देशों में हिंदी पत्रकारिता के उद्भव एवं विकास को भी पुस्तक रेखांकित करती है। पुस्तक में पत्रकारिता के हर पहलू पर प्रकाश डाला गया है।

• जोशी, डॉ. सुशीला. (1991). हिंदी पत्रकारिता विकास और विविध आयाम, जयपुर: राजस्थान हिंदी।

डॉ. सुशीला जोशी द्वारा लिखित यह पुस्तक हिंदी पत्रकारिता के विकास को समझने और जानने के लिए बहुत ही उपयोगी है। प्रस्तुत पुस्तक हिंदी पत्रकारिता की अन्य पुस्तकों से हटकर हिंदी मो और पत्रकारिता को केंद्र में रखकर लिखी गई है। पुस्तक शोध विषय के लिए उपयोगी है।

• Ram, Ganga, (1986). An Encyclopaedia of World Hindi Literature, New Delhi: Concept Publishing Co.

प्रस्तुत पुस्तक हिंदी के विश्वव्यापी स्वरूप को बहुत ही अच्छे ढंग से प्रस्तुत करता है साथ ही यह विश्व में हिंदी के विकास को भी रेखांकित करती है। पुस्तक से शोध विषय में प्रगाढ़ता लाने में मदद मिलती है। पुस्तक में हिंदी के विश्व इतिहास को भी दर्शाया गया जिसमें हिंदी के उत्थान में पत्रकारिता की भूमिका को भी स्पष्ट किया गया है।

• Sharma, Guru Dayal, (1987). Memories of Fiji 1887-1987, Suva, Fiji: G.D. Sharma.

फिजी में भारतीयों के आगमन और उनके संघर्षों की बानगी प्रस्तुत पुस्तक में दिखाई गई है। पुस्तक फिजी में पत्रकारिता के विकास और हिंदी के फिजी में प्रादुर्भाव की कहानी कहती है। प्रस्तुत पुस्तक शांतिदूत के संपादक गुरु दयाल शर्मा द्वारा लिखी गई

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

है जिसमें उन्होंने फिजी के अनकहे पहलुओ को भी उजागर किया है। प्रस्तुत पुस्तक फिजी की हिंदी पत्रकारिता और शांतिदूत समाचारपत्र को समझने के लिए बहुत ही उपयोगी है।

- Gillion, Kenneth L. (1977). The Fiji Indians: Challenge to European Dominance, Canbara: Australian National University Press.

प्रस्तुत पुस्तक फिजी में भारतीयो के आगमन और उनके संघर्षों की कहानी बयां करती है कि कैसे विषम परिस्थितियों के बावजूद फिजी के भारतीय अपनी भाषा और संस्कृति को बचाए रखने में कामयाब हुए। गिरमिटिया मजदूरों के फिजी में आगमन के समय वो बहुत ही ज्यादा दयनीय स्थिति में थे उनसे कोड़ों के बल पर खेतो में काम कराया जाता था साथ ही उन्हें भोजन भी समय पर नहीं दिया जाता था प्रस्तुत पुस्तक फिजी में प्रवसन के समय कि स्थिति को समझने के लिए बहुत ही उपयोगी है शोध के लिए यह पुस्तक महत्वपूर्ण है।

शोध की सीमाएं:

प्रस्तुत शोध अध्ययन को फ़िजी में हो रही हिंदी पत्रकारिता का केन्द्रित किया गया है। शोध अध्ययन के माध्यम से विदेशों में हिंदी पत्रकारिता का विकास और हिंदी के प्रचार प्रसार में हिंदी समाचार पत्रों की भूमिका का पता लगाने के लिए शांतिदूत समाचारपत्र का चयन किया गया है। शोध अध्ययन शांतिदूत समाचारपत्र द्वारा फ़िजी में हो रहे हिंदी भाषा के विकास पर प्रकाश डालता है।

शोध का महत्व:

वर्तमान समय में देश में अंग्रेजी भाषा के बढ़ते समाचारपत्र और लिखने-पढ़ने में अंग्रेजी भाषा को ज्यादा महत्व दिए जाने के कारण अपने ही देश में हिंदी उपेक्षित दशा में है। जबकि पूरा विश्व हिंदी की तरफ आकर्षित है और उसे अपने विद्यार्थियों को सीखा रहा है। ऐसे में फ़िजी में हिंदी पत्रकारिता और समाचारपत्र के शोध अध्ययन की महत्ता काफी बढ़ जाती है। इस अध्ययन के माध्यम से फ़िजी में हिंदी पत्रकारिता को समझने

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

और वहां हिंदी के प्रचार-प्रसार को समझने में मदद मिलेगी। भारतेन्दु जी ने लिखा है निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, प्रस्तुत शोध अध्ययन हिंदी पत्रकारिता और शांतिदूत समाचारपत्र के आठ दशकों को समझने में बहुत महत्वपूर्ण है।

शोध प्रविधि:

प्रस्तुत शोध अध्ययन 'फ़िजी में हिंदी पत्रकारिता और शांतिदूत समाचारपत्र' हेतु निम्न शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है-

- अंतर्वस्तु विश्लेषण- शोध अध्ययन को मूर्त रूप देने के लिए अंतर्वस्तु विश्लेषण शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। इस प्रविधि के माध्यम से शांतिदूत समाचारपत्र का गहन विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना:

हिंदी पत्रकारिता का भारत में उद्भव पं जुगल किशोर शुक्ल के उदन्त मार्तंड 30 मई, 1826 से होता है और इस दिवस को भारत में हिंदी पत्रकारिता दिवस के रूप में मनाते हैं। फिजी में हिंदी की पहुंच और वहां पर हिंदी पत्रकारिता का उद्भव भारतीयों के फिजी में प्रवेश के कुछ समय बाद से ही शुरू हो गया। फिजी को अंग्रेजों ने सन 1874 में अपने अधीन कर लिया था। जिसके बाद 1879 में गन्ने के खेतों में काम करने के लिए भारतीय मजदूरों को एग्रीमेंट कर यहां लाया गया। यही एग्रीमेंट शब्द बाद में अपभ्रंश का शिकार हो कर गिरमिट हो गया और भारतीय कामगारों को गिरमिटिया मजदूर कहा जाने लगा। फिजी में हिंदी पत्रकारिता की शुरुआत 1913 के सेटलर समाचारपत्र से मानी जाती है। हालांकि यह समाचारपत्र अनुवादित था। इसके बाद 1923 में फिजी समाचारपत्र का प्रकाशन हुआ। यह साप्ताहिक पत्र था और इसका सम्पादन श्री बाबू राम सिंह ने किया। इसके बाद भारत पुत्र, बुद्धि तथा बुद्धिवाणी आदि समाचारपत्रों ने फिजी में हिंदी पत्रकारिता को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई लेकिन ये समाचारपत्र अधिक समय तक यथावत नहीं रह सके और अल्प समय में ही बंद हो गए। लेकिन हिंदी पत्रकारिता की गति थमी नहीं। इसके बाद वैदिक संदेश, सनातन धर्म,

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शांतिदूत, किसान, दीनबंधु, ज्ञान, तारा, पुस्तकालय, प्रवासिनी, प्रकाश, जंजाल, सनातन प्रकाश, मजदूर, जागृति, आवाज, झंकार आदि समाचारपत्रों ने हिंदी पत्रकारिता को एक अलग मुकाम दिया। फिजी में हिंदी पत्रकारिता का विशेष प्रभाव रहा चूंकि फिजी में कृषि कार्यों की अधिकता थी इसलिए अधिकतर समाचारपत्रों की विषयवस्तु खेती किसानी ही हुआ करती थी। फिजी में हिंदी समाचारपत्र के विकास और भारत के हिंदी समाचार पत्रों के विकास में बहुत ज्यादा अंतर नहीं दिखाई पड़ता बल्कि बहुत हद तक सादृश्य ही जान पड़ता है। भारत में भी हिंदी पत्रकारिता के शुरुआती दौर में बहुत से समाचारपत्र अस्तित्व में आए लेकिन अल्प समय में ही बंद हो गए ठीक वैसी ही कुछ परिस्थिति फिजी की भी दिखाई पड़ती है।

फिजी में भारतीय मूल के लोगों का गौरवशाली और संघर्षपूर्ण इतिहास है। इन साधनविहीन भारतीयों ने अपने जन्मस्थान से हजारों किलोमीटर दूर समुद्र की गर्जना करती लहरों के सान्निध्य में और मूल रूप से जंगलों में रहने वाले अपरिचित मूल निवासियों के साथ रहकर तालमेल बिठाया। अंग्रेजों के अत्याचारों को सहा और अपने परिश्रम और कर्मठता से घने और बीहड़ जंगलो को हरे-भरे खेतों में बदल दिया। यह यात्रा बड़ी संघर्षपूर्ण रही है। इसमें इतनी कठिनाईयां, इतनी चुनौतियां हैं कि फिजी के गिरमिटयों की कहानी एक रोचक, लोमहर्षक परिदृश्य प्रस्तुत करती है। इस इतिहास को जानना-समझना भारत और उसके डायस्पोरा के लिए बहुत आवश्यक है। इस गौरवगाथा को, उसके उतार-चढ़ाव को, उसकी चुनौतियों को उनकी भाषा में प्रस्तुत करना बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य था। लेकिन दो-चार साल नहीं, दो-चार दशक नहीं बल्कि आठ दशक तक ऐतिहासिक घटनाओं, मुद्दों, विद्रोहों, समस्याओं को प्रस्तुत करने का काम हिंदी भाषा में 'शांतिदूत' नामक साप्ताहिक हिंदी समाचारपत्र ने किया। 11 मई, 2019 को साप्ताहिक शांतिदूत के 84 वर्ष पूरे हुए। शायद ही भारत से बाहर किसी हिंदी समाचारपत्र की इतनी आयु हो। शांतिदूत के इस गौरवशाली प्रकाशन का प्रवासी हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। 11 मई, 1935 में शांतिदूत के

प्रकाशन से हिदी का जो शंख बजा, वह हुंकार आज भी ध्वनित हो रही है। शांतिदूत फिजी मूल के भारतीय किसानों का अखबार है। गांवों में ज्यादा पढ़ा जाता है। इसकी प्रसार संख्या गांवों मे शहरों से अधिक है और वहां यह पंचायती अखबार रहा है। जहां एक समय में दसियों लोग इसे पढ़ते हैं। किसानों की समस्याओं को लेकर यह प्रारंभ से ही आवाज उठाता रहा है।

फिजी डायस्पोरा को जोड़े रखने में भी शांतिदूत का विशेष हाथ रहा है। पिछले पचास वर्षों में आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड और अमरीका जाने वाले प्रवासियों में फिजीवासियों की संख्या बहुत है। सिडनी, मेलबोर्न, आकलैंड में तो ये बड़ी संख्या में हैं। वे लोग आज भी शांतिदूत पढ़ते हैं। शांतिदूत के लेखक हेमन्त विमल शर्मा, मेलबर्न, तेजराम शर्मा, सिडनी, मास्टर राधे प्रसाद, सिडनी, पंडित हरिशचन्द्र शर्मा, सिडनी। यहां तक की कैलिफोर्निया में भी फिजी का डायस्पोरा हिंदी और शांतिदूत के माध्यम से जुड़ा हुआ है।

जहां तक रचनात्मक साहित्य की बात है। शांतिदूत में कविता, कहानी व्यंग्य निरंतर प्रकाशित होते रहे हैं। फिजी के वरिष्ठ लेखक जोगिन्दर सिंह कंवल शांतिदूत में निरंतर लिखते रहे हैं। कविता-शायरी को लेकर एक नियमित स्तंभ छपता है। इसमें नए लिखने वालों को स्थान दिया जाता है। भारत की आजादी से पहले शांतिदूत में वे कहानियां प्रकाशित की जाती रही हैं जिससे भारत की स्वतंत्रता की ज्वाला और प्रदीप्त हो।

शांतिदूत मानक हिंदी में प्रकाशित होता है परंतु फिजी हिंदी में भी इसके कई -एक कालम छपते हैं। फिजी हिंदी की अपनी मिठास है, भोजपुरी-अवधी मिश्रित, फिजी के

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

स्थानीय समाचारपत्र शांतिदूत में एक कालम आता है- बईठकी। इसमें वरिष्ठ लोगों से बीते समय और घटनाओं के बारे में चर्चा की जाती है।

बईठकी में फिजी हिंदी की एक बानगी –

बड़का के घर आए रही बड़का के सास, बबरीबन से। एक सौ सात बरस के रही। लेकिन रही बड़ी चरफर, नाक में बड़का किल पहिने, बड़का-बड़का मोहर, हथवा में चांदी के मोट-मोट चुड़िया, कनफुलवो रहे सोना के, बड़का लहंगा, मुड़िया पे फुल टायेम ओढ़नी अऊर बातचीत में तो पूछो नई भाई, मू तोड़ जवाब। बईठकी दल वाले भी पहुंच गईन, सोचिन चलो थोरा पुराना समाचार ले लई जाए। वही डरमवा वाला फूस घर में पाल-वाल बिछा, घोर-घार भय, एक-एक चला अऊर गपोड़वार्ता शुरू होई गए। अऊर हाँ, बड़का के सास के सब माई बोलत रहिन (पहिले के टेम पे ससुर के 'बाबा' अऊर सास के ' माई' बोला जाता रहा, आज कल तो सब मम्मी डैडी होई गईन है)।

डायस्पोरा पत्रकारिता में शांतिदूत का विशेष महत्व है। फिजी में रहने वाले भारतीय समाज के आशाओं-अपेक्षाओं, आशंकाओं, रूचियों और सरोकारों को शांतिदूत ने प्रभावी तरीके से प्रस्तुत किया। इस कार्य के लिए शांतिदूत की संपादकीय टीम ने हिंदी पत्रकारिता की गौरवशाली परंपरा का पालन किया। इस संदर्भ में प. गुरूदयाल शर्मा फिजी में हिंदी पत्रकारिता के भीष्म पितामह कहे जा सकते हैं। फिजी में भारतीय समाज विशेष रूप से हिंदी समाज की धड़कने इसमें सुनाई पड़ती है।

शोध निष्कर्ष:

प्रस्तुत अध्ययन 'फ़िजी में हिंदी पत्रकारिता और शांतिदूत समाचारपत्र' से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए-

- फ़िजी में हिंदी भाषा के मानक प्रयोग और हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में शांतिदूत समाचारपत्र का विशेष योगदान है।
- शांतिदूत समाचारपत्र भारतीय भाषा हिंदी और भारतीय संस्कृति को फ़िजी में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

- शांतिदूत समाचारपत्र फ़िजी में हिंदी भाषा में सबसे लंबे समय से प्रकाशित होने वाला समाचारपत्र है।
- शांतिदूत समाचारपत्र ने अवधी और भोजपुरी को भी फ़िजी में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

शोध सुझाव:

प्रस्तुत शोध अध्ययन विषय 'फ़िजी में हिंदी पत्रकारिता और शांतिदूत समाचारपत्र' के अध्ययन के पश्चात निम्नलिखित सुझाव दिए जा रहे हैं-

- विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए स्थापित संस्थानों को प्रोत्साहित करने के लिए भारत सरकार को विशेष योजनाएं चलाने की महती आवश्यकता है।
- विदेशों में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों को भारत में भी उपलब्ध कराने की व्यवस्था भारत सरकार को करनी चाहिए।
- विदेशों में हिंदी समाचारपत्रों की संख्या बढ़ाने के लिए सरकार को एक विभाग का गठन करने की आवश्यकता है जो विश्व के प्रत्येक देश में हिंदी के पत्रों का प्रकाशन और वितरण सुनिश्चित करें।

शोध की उपयोगिता:

प्रस्तुत शोध अध्ययन विषय 'फ़िजी में हिंदी पत्रकारिता और शांतिदूत समाचारपत्र' पर शोध वर्तमान समय में बहुत ही प्रासंगिक और उपयोगी है। यह शोध फिजी की पत्रकारिता के विभिन्न आयामों के साथ गिरमिटिया के इतिहास और पत्रकारिता के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने में बहुत ही उपयोगी है। प्रस्तुत शोध में विदेशों में हो रही पत्रकारिता और उनके स्वरूप की व्याख्या की गई है। इस शोध के माध्यम से फ़िजी में हिंदी पत्रकारिता की स्थिति के बारे में भी अवगत हो सकते हैं। वर्तमान समय में लोगों का झुकाव अंग्रेजी की तरफ ज्यादा है ऐसे में विदेशों में हो हिंदी के प्रति लगाव को भी यह शोध प्रस्तुत करता है। इसके माध्यम से लोग हिंदी पत्रकारिता और हिंदी के महत्व

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

को भी जान सकते हैं। प्रस्तुत शोध डायस्पोरा देशों में हिंदी पत्रकारिता को समझने में मददा करेगा। यह शोध फिजी की हिंदी पत्रकारिता के प्रत्येक पहलू को उजागर करता।

सहायक संदर्भ सूची:

जैन, डॉ. पवन कुमार, (1993). विदेशों में हिंदी पत्रकारिता, नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन।

जोशी, रामशरण, (2014). भारतीय डायस्पोरा: विविध आयाम, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

वैदिक, डॉ. वेद प्रताप, (1976). हिंदी पत्रकारिता के विविध आयाम, कानपुर: नेशनल पब्लिशिंग हाउस।

चतुर्वेदी, जगदीश प्रसाद, (1987). पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य, इलाहाबाद : साहित्य संगम।

जोशी, डॉ. सुशीला. (1991). हिंदी पत्रकारिता विकास और विविध आयाम, जयपुर: राजस्थान हिंदी।

Ram, Ganga, (1986). An Encyclopaedia of World Hindi Literature, New Delhi: Concept Publishing Co.

Sharma, Guru Dayal, (1987). Memories of Fiji 1887-1987, Suva, Fiji: G.D. Sharma.

Gillion, Kenneth L. (1977). The Fiji Indians: Challenge to European Dominance, Canbara: Australian National University Press.

बेवसाइट संदर्भ:

https://www.bharatdarshan.co.nz/magazine/literature/824/hindi-in-fiji-vivekanand-sharma.html

https://bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%

https://books.google.co.in/books?id=cU9iDwAAQBAJ&pg=PA175&lpg=PA175&dq=%E0%A4%AB%

http://morchepar.blogspot.com/2017/10/80.html

http://www.abhivyakti-hindi.org/snibandh/2006/fiji_hindi/fiji_hindi1.htm

https://books.google.co.in/books?id=AOgyLMW2UNUC&pg=PA266&lpg=PA266&dq=%E0%A4

https://www.nazar-nazariya.com/2019/06/06/fiji-dvip-par-hindi-ka-alakh-jagate-girmitiya/